खट्टर की रहनुमाई में सभी सीटें जीतने का असर विधानसभा चुनावों पर पड़ेगा

राज्य की सभी 10 सीटों का गहन विश्लेषण

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः लोकसभा चुनाव में हरियाणा की 10 सीटों के नतीजे न सिर्फ हिला देने वाले हैं बल्कि अगले पांच-छह महीने बाद होने वाले राज्य विधानसभा चुनाव को बुरी तरह प्रभावित करने वाले हैं।

'मज़दूर मोचा' ने अपने पिछले अंक में सर्वे के आधार पर एक अनुमान यह भी बताया था कि नतीजे 9-1 यानी 9 पर भाजपा और 1 पर जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) रहेगी। लेकिन सभी भविष्यवाणियों को झुठलाते हुए भाजपा ने राज्य की सभी 10 सीटों पर कब्जा कर लिया। हम अभी इस पर बात नहीं करेंगे कि यह जीत ईवीएम में गड़बड़ी करके हासिल की गई है या वाकई जनता ऐसा ही चाहती थी। जिन सीटों पर जीतने का अंतर बहुत ज्यादा है, वहां ईवीएम में हेराफेरी की बात पर सहसा विश्वास नहीं होता लेकिन जहां जीत हार का अंतर कम है, वहां आंकड़े ही बता रहे हैं कि विपक्ष ने भाजपा को तगड़ी टक्कर दी है। हरियाणा में भाजपा को 58 फीसदी वोट मिले जबकि कांग्रेस को 28.4 फीसदी मिले। इस 30 फीसदी अंतर को जब तक कांग्रेस पाटती नहीं तब तक विधानसभा या लोकसभा चुनाव में उसकी वापसी नामुमकिन है। इसी चुनाव में इनैलो को 1.89 और बसपा को 3.64 फीसदी वोट मिले हैं। दोनों का समझौता था, अगर दोनों के वोट जोड़ दिये जायें तो यह करीब पांच फीसदी बैठता है। अन्य का वोट प्रतिशत 7.15 फीसदी है। जिसमें जेजेपी का वोट शेयर शामिल है। हरियाणा में सरकार बनाने का मुंगेरीलाल जैसा सपना देख रही आम आदमी पार्टी को इस चुनाव में 0.36 फीसदी वोट मिले हैं। इस तरह आप पार्टी का आगाज और अंजाम साथ-साथ आ चुका है। देखा जाय तो बसपा, इनैलो, जेजेपी और आप को मिले मामूली वोटों को जोड़ दिया जाय तो यह कांग्रेस के ही वोट थे, जो उन्हें ट्रांसफर हुए हैं। अगर विधानसभा चुनाव में इन वोटों का ट्रांसफर कांग्रेस रोक सकी तो वह फायदे में रहेगी।

हम सबसे पहले बात करेंगे कि इन नतीजों का असर क्या-क्या पड़ने वाला है-

1. हरियाणा विधानसभा के चुनाव इसी साल अक्टूबर-नवंबर तक होने हैं। एक समय लचर कानून व्यवस्था और कमजोर प्रशासनिक पकड़ के कारण यह लग रहा था कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को भाजापा आलाकमान कभी भी हटा सकता है लेकिन खट्टर अपने आला कमान से भी होशियार निकले और न सिर्फ अपनी कुर्सी बचाई बल्कि सभी दस सीटों पर पार्टी को जीत दिलाई। करनाल लोकसभा सीट छोड़कर खट्टर के कहने से कहीं कोई टिकट आला कमान ने नहीं दी लेकिन करनाल में संजय भाटिया को टिकट दिलाकर खट्टर अपने आपको हरियाणा का सर्वमान्य पंजाबी नेता स्वीकार करा चुके हैं। खट्टर ने वही रणनीति अपनाई है जो कभी भजनलाल ने पंजाबी राजनीति करने के नाम पर अपनाई थी। तमाम सामाजिक कार्यक्रमों में सिर्फ पंजाबी कार्यक्रम में जाने को महत्व देना, उनके लोकल नेताओं को बुलाकर चंडीगढ़ में चाय नाश्ता कराना, पंजाबी बहुल शहरों में बार-बार चक्कर काटना उनकी रणनीति का हिस्सा बन चुका है। विधानसभा चुनाव में खट्टर की कार्यशैली का असर साफ-साफ दिखाई देगा।

2. खट्टर चूंकि पंजाबी राजनीति के नये पैरोकार हैं तो उन्होंने और भाजपा ने उसकी खातिर हरियाणा की जाट राजनीति को छिन्न भिन्न कर दिया है। 'मजदूर मोर्चा' इन तथ्यों को अपने पिछले अंकों में बता चुका है कि भाजपा और खट्टर ने जाट राजनीति के वर्चस्व को तोड़ने के लिए क्या - क्या गोटियां बैठाईं और उसका नतीजा सामने है। भाजपा ने भिवानी-महेंद्रगढ़ से धर्मवीर और पूर्व केंद्रीय मंत्री चौधरी बिरेंद्र सिंह के बेटे बिजेंद्र सिंह को जाट के नाम पर टिकट देकर चुप करा दिया। इनमें से दोनों ही ऐसे नहीं हैं कि वे मोदी के मंत्रिमंडल में जगह पा सकें। हालांकि बिरेंद्र सिंह अभी से अपने आईएएस बेटे को मोदी कैबिनेट में मंत्री बनवाने के लिए सक्रिय हो गये हैं। जाटों का वर्चस्व तोड़ने का फायदा विधानसभा चुनाव में भाजपा को यह मिलेगा कि उसने लोकसभा चुनाव में जिस तरह जाट राजनीति का खासतौर पर प्रतिनिधित्व करने वाली दो पार्टियों जेजेपी और चौटाला की इनैलो पार्टी की कमर तोड़ी है, वे विधानसभा चुनाव में भाजपा का सामना करने की स्थिति में नहीं होंगी। भाजपा ने ऐसी स्थिति बना दी है कि विधानसभा चुनाव में उसका मुकाबला सिर्फ कांग्रेस से हो।

इसमें उसका फायदा है। अगर जाट राजनीति का दम भरने वाली जेजेपी और इनैलो मजबूत होंगी तो वोट बंट जायेगा और भाजपा को लाभ नहीं होगा। भाजपा हरियाणा में हमेशा सीधा मुकाबला चाहती है। अगर किसी को याद हो तो ताऊ देवीलाल के समय में जब उनका भाजपा से समझौता हुआ तो स्व. मंगलसेन की तिकड़मबाजी में आकर ताऊ ने 17 सीटें समझौते में तत्कालीन भाजपा को दी थी लेकिन दोनों दलों का यह समझौता बहुत दिनों तक चला नहीं।

आइए, अब हरियाणा की हर सीट पर नजर डालते हैं -

फ़रीदाबाद

फरीदाबाद से भाजपा के कृष्णपाल गुर्जर को 68.8 यानी 913222 वोट मिले और कांग्रेस के अवतार सिंह भड़ाना को मात्र 20.72 यानी 274983 वोट मिले यानी 274983 वोट मिले कांग्रेस प्रत्याशी अवतार को 274983 वोट प्राप्त हुए। यहां से बसपा, इनैलो, आम आदमी पार्टी का नवीन जयहिंद कहीं भी ठहर नहीं सके। यानी अगर यहां इन तीनों पार्टियों को उनके समुदाय के आधार पर वोट मिलते तो भी भाजपा का हारना मुश्किल था। फ़रीदाबाद की जनता के सामने दो बुरे प्रत्याशियों में से किसी एक को ही चुनने का विकल्प था। राष्ट्रवाद की आंधी में बहते हुए उसने कृष्णपाल को वोट दिया। हालांकि लोग भाजपा प्रत्याशी को उसके कारनामों की वजह से हराना चाहते थे लेकिन उन्होंने मोदी के नाम पर उसे वोट दे दिया। फ़रीदाबाद में कांग्रेस से मोहभंग होने की एक वजह यह भी है कि पहले यह टिकट तिगांव के विधायक ललित नागर को दी गई लेकिन अंतिम क्षणों में उनसे टिकट वापस लेकर अवतार को दे दी गई। इससे कांग्रेस के पुराने मतदाता नाराज हो गये। ललित नागर की छवि गुर्जर बिरादरी में इन दोनों से बेहतर मानी जाती है, ऐसे में अगर ललित नागर लड़ते तो मुकाबला तय था। बहरहाल, फ़रीदाबाद एक ऐसी सीट है, जहां भाजपा को पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा वोट मिले और उसके प्रत्याशी ने बड़े वोटों के अंतर से कांग्रेस प्रत्याशी को हराया।

अंबाला (सुरक्षित)

यहां पर भाजपा के रतनलाल कटारिया को 56.72 फीसदी वोट मिले जबकि कांग्रेस की शैलजा को 30.71 फीसदी वोट मिले। कांग्रेस प्रत्याशी तीन लाख वोटों से ज्यादा वोटों से हारीं। हालांकि हमारे आकलन के हिसाब से शैलजा एक मजबूत प्रत्याशी थीं लेकिन दलित होने के बावजूद दलित वोट कांग्रेस को धोखा देकर भाजपा में चले गये। दलितों ने वहां बसपा को भी वोट नहीं किया। दलितों का वोट भाजपा की तरफ जाना उन दलों के लिए खतरे की घंटी है जो दलितों के वोट पाने को बेकरार रहती हैं।

भिवानी-महेंद्रगढ़

यहां भाजपा प्रत्याशी धर्मवीर को 63.45 फीसदी और कांग्रेस की श्रुति चौधरी को 25.17 फीसदी वोट मिले। धर्मवीर ने 1,29,394 वोटों के अंतर से हराया। भिवानी जाट बहुल इलाका है और चौधरी बंसीलाल का गढ़ माना जाता है। श्रुति उसी खानदान से है। लेकिन भिवानी में जाटों को भाजपा ने बांट दिया या कहिये कि जाट खुद ही बंट गया। इस सीट से जेजेपी को करीब 85 हजार वोट मिले। इसी तरह इनैलो को यहां 0.69 फीसदी वोट मिले।

गुड़गांव

यहां भाजपा के राव इंद्रजीत को 60.94 और कांग्रेस के कैप्टन अजय यादव को 34.24 फीसदी वोट मिले। भाजपा के राव इंद्रजीत ने कांग्रेस प्रत्याशी को 274722 वोटों के अंतर से हराया। मेवात के मुस्लिम मतदाताओं ने कांग्रेस प्रत्याशी की इज्जत बचा ली वरना कांग्रेस को और भी कम वोट मिलते। जेजेपी ने मुसलमान वोटों को ठिकाने लगाने के लिए यहां से महबूब खान को उतारा था, जिन्हें मात्र 8993 वोट या 0.62 फीसदी वोट मिले। अगर मेवात का मुस्लिम मतदाता इस आधार पर वोट करता कि उसे मुस्लिम प्रत्याशी को जिताना है तो उसे महबूब खान को वोट देना चाहिए था लेकिन उसने कांग्रेस के हिंदू प्रत्याशी कैप्टन अजय यादव को थोक में वोट दिया लेकिन गुड़गांव के शहरी मतदाता ने इतनी बड़ी तादाद में वोट डाला कि राव इंद्रजीत को मेवात की भरपाई गुड़गांव शहर से हो गई। यहां इनैलो भी खड़ी थी लेकिन उसे मात्र 0.69 फीसदी वोट मिले। मेवात के मुस्लिम मतदाताओं ने बता दिया कि वे जाति नहीं बल्कि समीकरण के आधार पर समझबूझ कर मतदान करते हैं।

हिसार

भाजपा के बृजेंद्र सिंह को 51.13 और जेजेपी के दुष्यंत चौटाला को 24.51 फीसदी वोट मिला। दुष्यंत सिर्फ 31 हजार से ज्यादा वोटों से हारे। यहां पर कांग्रेस तीसरे नंबर पर रही जिसके प्रत्याशी भव्य विश्नोई को 15.63 फीसदी वोट मिले। भव्य विश्नोई भजनलाल के पोते हैं।. इस सीट पर कड़ा मुकाबला था। दुष्यंत यहां से मौजूदा एमपी थे। लेकिन उनके सामने पूर्व केंद्रीय मंत्री बिरेंद्र सिंह के आईएएस बेटे बिजेंद्र सिंह थे। यहां से इनैलो को 0.83 फीसदी वोट मिला है। हालांकि यह मामूली वोट है लेकिन यही वोट दुष्यंत पर भारी पड़ा। बहरहाल, जेजेपी ने अपनी साख कम से कम बचा ली है। जबकि चौटाला पार्टी के यहां डूबने में कोई कसर नहीं बची है।

करनाल

भाजपा के संजय भाटिया को 70.08 और कांग्रेस के कुलदीप शर्मा को 19.64 फीसदी वोट मिले। भाजपा ने कांग्रेस को 360147 वोटों के अंतर से हराया। यहां से इनौलो को 1.21 फीसदी वोट मिले लेकिन वो भी भाजपा का रास्ता नहीं रोक सके। इस सीट पर जीत का सारा श्रेय मुख्यमंत्री को जाता है। चूंकि यह टिकट उन्हीं के खाते में थी इसलिए उन्होंने संजय भाटिया को जिताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यहां से किसी पंजाबी के चुने जाने का असर राज्य विधानसभा चुनाव में जरूर पड़ेगा।

कुरुक्षेत्र

यहां से भाजपा के नायब सैनी को 55.98 फीसदी और कांग्रेस के निर्मल सिंह को 24.71 फीसदी वोट मिले। कांग्रेस 129736 वोटों के अंतर से हारी। यहां से जेजेपी और इनैलो वोट कटवा पार्टी साबित हुए। अगर अच्छी तादाद में यहां वोट इन दोनों दलों को न जाते तो कांग्रेस आसानी से जीत सकती थी। यहां से इनैलो को 4.93 फीसदी और जेजेपी को 5.57 फीसदी वोट मिले हैं। कुरुक्षेत्र ही एकमात्र लोकसभा सीट है जहां इनैलो को थोड़ा बहुत वोट मिला है लेकिन उसकी वजह से कांग्रेस को नुकसान हो गया। लेकिन जेजेपी यहां भी इनैलो के मुकाबले भारी पड़ी है। विधानसभा चुनाव में जेजेपी यहां बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद कर सकती है।

रोहतक

यहां से भाजपा के अरविंद शर्मा को 47.01 और कांग्रेस के दीपेंद्र सिंह हुड्डा को 46.4 फीसदी वोट मिले। इतने मामूली अंतर से यह सीट कांग्रेस हार गई, ऐसी उम्मीद किसी को नहीं थी। यहां से इनैलो 0.59 फीसदी वोट लेकर धूल चाट गई लेकिन जेजेपी के प्रदीप देसवाल को 1.74 फीसदी वोट मिले। अगर जेजेपी को यह वोट न मिले होते तो कांग्रेस की सीट यहां से निकल रही थी। इस तरह रोहतक की हार में जेजेपी समर्थक मतदाताओं का हाथ है। विधानसभा चुनाव में जेजेपी यहां बेहतर कर सकती है। जेजेपी प्रत्याशी की छवि भी साफ सुथरी बताई जाती है। जिसका असर रोहतक के पढ़े लिखे मतदाताओं पर देखा गया। दीपेंद्र को अपनी यह सीट बरकरार न रख पाने का मलाल जिंदगी भर रहेगा क्योंकि जीत उनके बिल्कुल पास आकर भी निकल गई।

सिरसा

यहां से भाजपा की सुनीता दुग्गल को 52.16 और कांग्रेस के अशोक तंवर को 29.53 फीसदी वोट मिले। भाजपा ने 115736 वोटों के अंतर से यह सीट जीती। अशोक तंवर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं। लेकिन इतनी करारी हार की उम्मीद उन्हें भी नहीं होगी। यहां पर इनैलो की चर्चा करना ज्यादा जरूरी है। सिरसा का मतलब चौटाला खानदान से है। लेकिन इनैलो को यहां पूरे विधानसभा क्षेत्रों से 88 हजार से कुछ ज्यादा यानी 6.43 फीसदी वोट मिले। चौटाला खानदान पार्ट 2 यानी जेजेपी को यहां 95 हजार से ज्यादा वोट मिले। इस तरह भाजपा के सामने इनैलो पार्टी या चौटाला खानदान की राजनीति का अंत उनके अपने जिले में हो गया।

सोनीपत

यहां से भाजपा के रमेश चंद्र कौशिक को 52.03 और कांग्रेस के भूपेंद्र सिंह हुड्डा को 37.43 फीसदी वोट मिले। पूर्व सीएम हुड्डा यहां मात्र 77414 वोटों से हारे। हुड्डा ने यहां से कभी नहीं सोचा होगा कि इतनी बुरी पराजय का सामना करना पड़ेगा। सोनीपत उनका अपना जिला है लेकिन मतदाताओं के आगे उन्हें रो-रो कर वोट मांगना पड़ा, इसके बावजूद सोनीपत वाले नहीं पसीजे। इस सीट से जेजेपी के दिग्विजय चौटाला को 51162 वोट या 4.53 फीसदी वोट मिले। हुड्डा को हराने का श्रेय जेजेपी को ही जाता है। अगर जेजेपी प्रत्याशी न होता तो हुड्डा आसानी से जीत जाते। लेकिन यहां भी इनैलो की दुर्दशा हुई है, उसे 0.81 फीसदी वोट मिले। सोनीपत जाट बहुल इलाका है लेकिन जाट मतदाताओं ने बता दिया कि उनके वोट आसानी से बांटे जा सकते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06